लोक कथा परिभाषा, स्वरूप एवं वर्गीकरण

डॉ संदीप कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
सनातन धर्म कॉलेज अम्बाला छावनी

लोक साहित्य में लोक कथा का स्वरूप अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विषय–वस्तु की व्यापकता एव रोचकता की दृष्टि से इसका मूल्य निःसंदेह अवर्णनीय है। भारत लोक कथाओं का अंनत सागर है। पृथ्वी पर मानव जन्म के साथ ही कहानी का भी उदय हुआ। आदिम युग से ही मानव–मन ने अपनी विचित्र अनुभूतियों को कथा का रूप प्रदान किया और इन कथाओं के माध्यम से ही वह अपने अपरिपक्व और अस्पष्ट जीवन दर्शन को अभिव्यक्ति करने लगा। मानव–मन के मनोभावों को दूसरों तक सम्प्रेषित करने का सहज व सरल तरीका लोक कथा ही है। मानव–मन व जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति दो रूपों में हुई है। एक पौराणिक व दूसरी लोक कथाओं के रूप में। जिस कथा में कथा वस्तु तथा उसकों कलात्मक परंपरा से आदि काल से चली जा रही है। लोक रंजक कल्पना प्रसूत और वैचित्य संकलित कहानियों को सुनने की जिज्ञासा मानव की नैसर्गिक प्रवृति है। लोक कथा विश्व व्याप्त है। इसमें लोक जीवन नाना रूपों में प्रकट होता है। मानव–मन के सुख–दुख, रीति–रिवाज, आस्थाएँ, धार्मिक विश्वास, प्रेम व श्रृंगार भाव मुख्यतः लोक कथाओं में अभिव्यक्त होते है।

लोक कथा की शास्त्रीय परिभाषा देना अत्यंत कठिन कार्य है। लोक कथा की परिभाषा देने का प्रयत्न पहले भी किया गया। विद्वानों ने लोक कथा की संज्ञा को एक साधारण अर्थवाचक शब्द के रूप में ही रहने दिया गया है जिसका प्रयोग परम्परागत, वृत्तात्मक विविध व्यंजन रूपों के लिए किया जाता रहा है। आधुनिक लोक साहित्य के विद्वानों मे सर्वप्रथम डॉ सत्येन्द्र ने लोक कथा की परिभाषा देने का प्रयास किया वे लोक कथा के परिभाषा देते हुए लिखते है कि – "लोक में प्रचलित और परंपरा से चली

आने वाले मूलतः मौखिक रूप में प्रचलित कहानियाँ कहलाती है।" लोक साहित्य पर अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत करते हुए डॉ सत्या गुप्ता ने लोक कथा की समीक्षा करते हुए उसकी परिभाषा न देकर उसके स्वरूप पर विचार करते हुए लिखा है, "लोक कथाओं में मानव की सब प्रकार की भावनाएं तथा जीवन–दर्शन समाहित हैं। भूत जानने की जिज्ञासा, घटनाओं का सूत्र, कोमल व कठोर भावना ये, समाजिक व ऐतिहासिक परम्पराए, जीवन दर्शन के सूत्र भी सभी कुछ लोक कथाओं में मिल जाते है।"

वास्तव में लोक कथा ऐसी मौखिक परंपरा है जिसमें लोक मानस के तत्व विशेष रूप से विद्यमान हो और जिनका उद्देश्य मनोरंजन के अतिरिक्त प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ज्ञान वर्धन भी हो वही हमारी दृष्टि से लोक कथा कहलायी जाएगी।

हरियाणवी लोक कथाओं का वर्गीकरण–

मनुष्य के अस्तित्व के साथ लोक कथाओं का इतिहास जुड़ा हुआ है। मनुष्य के हृदय में भावों के उदभव के साथ उन्हें दुसरों तक सम्प्रेषित करने का सहज व सरल तरीका कथा ही है। मानव ने अपने मनोभावों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए जिस दिन वर्जन शैली को स्वीकार किया उसी दिन लोक कथा का उदय हुआ। लोक कथाकार की जिहवा की लेखनी से लोक कथाए एक हृदय से दूसरे हृदय अंकित होती आई है। मानव–मन के शाश्वत बाल भावों को लोक कथाओं में हम सहजता से अभिव्यक्त होते हुए पाते है। लोक मानस लोक कथाओं के माध्यम से प्रदत्त ज्ञान को अधिक सहजता से ग्रहण करना है। मनुष्य के रहन–सहन, रीति–रिवाज, धार्मिक विश्वास लोक कथाओं को जीवतंता प्रदान करते है।

मानव मनोभाव असंख्य है। मनोभावों की तरह लोक कथाओं की सीमा भी असंख्य है। लोक कथाएं नाना रूपों लोक जीवन को आच्छादित किये हुए है। अतः उनका क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विशाल है। हरियाणा की लोक कथाओं का जन्म, बाल–बालिका, युवक यौवना, वैरागी महात्मा, बुढ़ा–बुढ़िया सभी के मुख से उच्चरित हुआ है। अनेक लोक–कथाओं का जन्म व्रतों एवं पर्वो से हुआ है। इन कथाओं के माध्यम से कथावाचक व्रत त्योहारों की महिमा वर्जित करता है।

अनेक व्रत ऐसे हैं जिन्हें औरत कथा कहकर समाप्त करती है। कहने का अभिप्राय यह है कि हरियाणा की लोक कथाओं का विषय अत्यंत व्यापक एवं विशद है। अध्ययन की सुविधा के लिए हरियाणवी लोक कथाओं का

वर्गीकरण हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं।

1. मनोरंजक लोक कथाएंः– मनोरंजन लोक कथाओं का प्रमुख तत्व रहा है। इसी तत्व से लोक कथा में श्रोता की दिलचस्पी पैदा होता हैं। हरियाणा की अधिकांश लोक कथाओं में मनोरंजन, आनंद व हास्य की प्रवृत्ति मिलती है। इस कोटि की लोक कथाएं श्रोता के हृदय में आनंद का झरना प्रस्फुटित कर देती है।

वस्तु वर्णन अपेक्षित है। यह अस्वाभाविक वस्तु आनंद का स्त्रोत व मनोरंजन पैदा करने वाला है। व्यापारी साहूकारी, लखटकिया, शेखचिल्ली, दो पहलवानों का फैसला, चिपक महादेव आदि इसी कोटि की कहानियाँ है।

2. शिक्षा–प्रद लोक कथाएं :– जिन लोक कथाओं के माध्यम से कोई शिक्षा, उपदेश और नीति की बात कही जाती है उन्हे शिक्षा प्रद कहानियों कहा जाता है शिक्षा व मनोरंजन इन लोक कथाओं का मूल आधार रहा है। मनोरंजन के साथ विभिन्न द्रष्टान्तों के माध्यम से उपदेश व शिक्षा दी जाती है। हास्त के पुट साथ दिया गया उपदेश श्रोता पर अमिट प्रभाव डालता है। इस कोटि की कहानियों के पात्र राज–वर्ग के प्राणी से लेकर सामान्य मनुष्य, पशु–पक्षी व विभिन्न जीव–जन्तु तक मिलते है। राजा और उनकी लड़की, जाटनी की चुतराई, चिड़िया और काम आदि ऐसी कहानियाँ है। जिनके बोल श्रोता के मन में गहराई तक अपना प्रभाव डालते है।

3. धार्मिक लोक कथाएंः– हरियाणा की विभिन्न लोक कथाओं में समाज में प्रचलित आस्था व विश्वास की सुन्दर अभिव्यक्ति मिलती है। विभिन्न पर्वो व त्योहारों पर व्रत रखना हरियाणा की नारी अपना पुनीत कर्तव्य मानवी है। इस कोटि की लोक कथाओं में हरियाणा जन–मानस के धार्मिक–विश्वासों, व्रत व त्योहारों का महात्म्य अत्यंत सजीवता से वर्णन किया जाता है।

ये लोक कथाएं मात्र लोक कथाएं न होकर समाज के लिए एक संदेश व प्रेरणा प्रदान करती है। धार्मिक लोक कथाओं में ईश्वर की प्राप्ति का सुगम साधन, सबल निष्ठा, श्रद्धा तथा निःस्वार्थ त्याग परमावयश्क माना जाता है। व्रत व पर्व संबंधी लोक कथाएं आधुनिक जीवन के सामाजिक पक्ष का धार्मिक आवरण में प्रस्तुतिकरण करनी है। व्रत के दिन महिलाएं पूजा सामग्री लेकर समूह रूप में बैठ जाती है तथा एक महिला उस व्रत से संबंधित कथा सभी को सुनाती है। करवा चौथ, नाग पंचमी की कथा, सत्य नारायण की कथा , शिव–पार्वती विवाह कथा आदि इसी कोटि की लोक

कथाएं है।

4. साहस व कौशलपूर्ण अलौकिक लोक कथाएंः–

इन लोक कथाओं में अमानवीय एवं अद्भुत वस्तुओं को वर्णन किया जाता है। भूत–प्रेत, डायन, देवता, दानव, परी और जादूगर सम्बन्धित कहानियों इसी वर्ग के अंतर्गत आती है। इन लोक कथाओं में श्रोता के मन की विपति के समक्ष दृढ़ साहस व वीरता की भावना उत्पन्न करना प्रमुख उद्देश्य रहा है। युवको के हृदय में जीवन शक्ति व ओज का संचार करना इन लोक कथाओं का प्रतिपाद रहा है। दान्य की कहानियाँ, ब्रहयम और उनका धर्म का बेटा, पीपल का प्रेत, लाल सिंह और हरिभधे आदि हरियाणा की लोक कथाएं इसी कोटि की है।

5. पौराणिक एवं देव विषमक लोक कथाएंः– हरियाणा प्रदेश में पौराणिक महापुरूषों राजा – रानियों वे देवी – देवताओं को कांकेर अनेक लोक कथाएं उपलब्ध होती है। पौराणिक व देव विषयक लोक कथाओं के माध्यम से नायक के चरित्र की उदारता व लकोपकारी रूप को प्रस्तुत करना तथा विभिन्न देवी–देवताओं के चरित्र को देतत्व के विशेष गुणों से सुशोभित प्रस्तुत किया जाता है। कृष्ण – सुदामा, राजा नल की कथा, राजा भोज की कथा, हनुमान जन्म की कथा, भाग्य का खेल आदि कथाएं इसी कोटि की है।

6. ऐतिहासिक लोक कथाएं :–

देशकाल व परिस्थिति का समाज पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। उन प्रभावों के अनुसार लोक समाज इनसे प्रभावित है। तथा लोक साहित्य का निर्माण करता है। लोक मानव शिक्षित समाज के इतिहास से कही अधिक ऐतिहासिक लोक कथाओं को प्रमाण मानता है। हरियाणा में ऐसी अनेक लोक कथाएं प्रचलित है, जिनमें विक्रमादित्य की शील बड़ी बेगम, हरिशचन्द्र, मोर ध्वज राजा, वीर बधे आदि ऐसी लोक कथाएं है। जो ऐतिहासिक पात्रों पर आधारित है। इनसे हरियाणा का लोक मानस अत्यंत प्रभावित हुआ है।

7. भुजौवल, चुटकुले व लघु छंद लोक कथाएंः–

इस कोटि की लोक कथाएं अन्य लोक कथायों से शिल्प की दृष्टि भिन्न होती है। भुजौवल लोक कथाओं में बड़े चातुर्य से बात पूछी जाती है। चातुर्य के चुटैलीपन के साथ रोचकता, मनोरंजकता व ज्ञानवधर्न इन कहानियों में समाविष्ट रहता है। लोक व्यवहार संबंधी प्रेरणा तत्व भी इन लोक कथाओ

में उपलब्ध होते है। कंजूस, साहूकार, राणा महाकाली, बुलाकी नाई आदि भुजौवल लोक कथाएं है।

चुटकली कहानियों में लौकिक के स्पष्टीकरण के लिए कथा का संयोजन किया जाता है , दुविधा में दोनो गए माया किली न राम, अन्धेर नगरी चौपट राजा टका शेर भाजी टका शेर खाजा उक्ति रूप मे ंप्रचलित लोक कथाएं है।

लघु छंद लोक कथाओं में वे कथाये आती है जिनमे भोले भाले बालक अपने जैसे निरीह पशु पक्षियों की कथाएं करते है। बालकों की जिज्ञासा की सन्तुस्टि इस कथा के माध्यम से भली प्रकार से होती है और यह कथा रूप बाल मनोविज्ञान के अधिक निकट है। इन कथाओं मे चरणों की पुनरावृत्ति की जाती है। इन लोक कथाओं का प्रभावशाली कथा का ढंग व सहज शैली श्रोता को अत्यंत प्रभावित करती है। चिड़िया व मूसी की कहानी, छिपकली और चुहिया, अंहकारी गीदड़ आदि लघु छंद कहानियाँ है। शिल्प की दृष्टि में इनमे चम्पू शैली को अपनाया जाता है।